पहला तीमुथियुस : परमेश्वर का घराना

असीम दया से अयोग्य पापियों का परमेश्वर से मिलाप और उनका उसमें स्थिर किया जाना

डॉ. डेविड प्लैट

अगस्त 14, 2011

असीम दया से अयोग्य पापियों का परमेश्वर से मिलाप और उनका उसमें स्थिर किया जाना
1 तीमुथियुस 1:3–20

यदि आपके पास परमे वर का वचन है, और मैं आशा करता हूँ कि होगा ही, तो मैं चाहूँगा कि आप 1 तीमुथियुस का पहला अध्याय खोलें। तो, हम सीधा पहले अध्याय की गहराई में उतरेंगे।

पिछले सप्ताह से याद करनेवाली दो बातें.....

हम चाहते हैं कि हमारी आराधना परमेश्वर पर केंद्रित हो

मैं आपको पिछले कुछ संदेशों में से एक–दो बातें याद दिलाना चाहूँगा, क्योंकि वे 1 तीमुथियुस से संबंधित हैं। पिछले संदेश में, हमने दो चीज़ों पर बातचीत की थी। एक, हमने बात की थी कि हम किस प्रकार अपनी आराधना परमेश्वर पर केंद्रित करना चाहते हैं; हम अपनी पूरी इच्छा से परमे वर को महिमा देना चाहते हैं। जब हम उससे मिलने के लिए एकत्रित होते हैं, तब हम हरेक शब्द, सोच विचार कर किया हमारा हर कार्य, उसी बिंदु की ओर केंद्रित करना चाहते हैं। इसलिए, हमारी आराधना के पीछे केवल वही एक अंतिम और तल्लीन कर देनेवाली प्रेरणा होनी चाहिए, क्योंकि हम पहले से अधिक परमेश्वर पर केंद्रित होना चाहते हैं।

हमारी आराधना के अभिन्न घटक.....

पिछले संदेश में हमने आराधना के अभिन्न घटकों पर बातचीत की थी...मैने उसकी सूची बनाई थी जिसे आप पहले ही देख चुके हैं, इसमें सबसे पहली और महत्वपूर्ण बात है स्तुति। वास्तविकता यह है कि जब हम एकत्रित होते हैं, तब हमारे एकत्रित होने का सबसे बड़ा कारण होता है परमे वर के प्रति प्रेम व्यक्त करना, परमे वर में आनन्दित होना, परम संतुष्टि देनेवाले परमेश्वर के प्रेम की इच्छा करना, उसकी स्तुति और आराधना करना। हम चाहते हैं कि सबसे पहली और महान आज्ञा, जो कहती है कि अपने पूरे मन से, आत्मा से, और बुद्धि से परमेश्वर से प्रेम रखना, यही आज्ञा, उसके जन के रुप में हमारे एकत्रित होने का केंद्रीय उद्देश्य हो।

स्तुति तब हमें अंगिकार की ओर ले जाती है। जब हम उसकी महानता को देखते हैं, और जब हम अपने जीवनों में उसकी आवश्यकता का अंगिकार करते हैं, तब वचन हमें परमेश्वर के आगे प्रार्थना में उपस्थित होकर अपने पापों के अंगिकार के लिए बुलाता है। हमें अपने जीवन में उसकी आवश्यकता को स्वीकारने, और तब अपने प्रति उसके अनुग्रह और उसकी दया को याद रखने के लिए बुलाया गया है। इसे हम वचन में दिया क्षमा का आ वासन बुलाते हैं जो हमें सुसमाचार से मिलता है, जो हमें बपतिस्मा में उद्धार के अंगिकार की ओर ले जाता है। मैं आपको प्रोत्साहित करते हुए कहना चाहूँगा कि यदि आप मसीह के पीछे चलनेवालों में से हैं, और आपने अभी तक बपतिस्मा नहीं लिया है, तो जितना जल्द हो सके बपतिस्मा ले लें।

इसलिए वे सारी बातें उस निर्देश की ओर ले जाती हैं, जहाँ हम परमेश्वर के बोले गए वचन को सुन सकते हैं। मैं प्रार्थना करता हूँ कि सिखाने के इस समय के दौरान मेरे मुख से या किसी और पास्टर या पुरनिए के मुख से परमेश्वर का वचन पूरी स्पष्टता के साथ निकले। मैं प्रार्थना करता हूँ कि इस समय हमारी आराधना में सभा किसी मनुश्य के घिसे–पिटे विचारों से नहीं, वरन् परमेश्वर के शाश्वत सत्य से भरे। तब वह हमें प्रभु भोज की मेज़ की ओर ले जाएगा, जहाँ हम मिल कर एकत्रित होते हैं, और मसीह की देह के रुप में स्वयं को याद दिलाएँ कि हमने स्वयं को मसीह के जीवन में, और उसकी मृत्यु में, और उसके पुनरुत्थान से संबंद्ध हो सकें, कि उसकी मृत्यु में हमने जीवन पाया है। हर सप्ताह एकत्रित होकर हम स्वयं को यही बात याद दिलाते हैं।

तब यह हमें बिचवई की प्रार्थना की ओर ले जाता है, जहाँ हम अपने–अपने स्थानो में वापिस लौटने से पहले, परमेश्वर पर अपनी निर्भरता को व्यक्त करने, उसके प्रति अपनी व्यग्रता को प्रकट करने, और हमारे जीवनों में उसकी महिमा के प्रगटीकरण करने हेतु एक दूसरे के लिए प्रार्थना करते हैं। हम एक दूसरे के लिए प्रार्थना करते हैं। यही है बिचवई की प्रार्थनाः एक दूसरे के लिए प्रार्थना करना, इस शहर और संसार भर की ज़रुरतों के लिए प्रार्थना करना। अपनी आराधना सभा में हम इसके लिए समय निकालते हैं जो हमें यीशु के महान आदेश को पूरा करने के लिए संसार भर में जाने के लिए तैयार करता है। हम सभी राष्ट्रों में चेले बनाना चाहते हैं। हम परमेश्वर के लोगों के रुप में आराधना करने एकत्रित होते हैं और फिर बिखर जाते हैं क्योंकि हम चाहते हैं कि सभी देशों के लोग परमेश्वर की आराधना करना जानें।

हमारी आराधना की केंद्रीय विशेषताएँ .....

तो, वह थीं आराधना के अभिन्न तत्व जिसके विषय में हमने अपने पिछले संदेश में बातचीत की थी, और हमने बातचीत की थी कि उन सभी बातों में चार पहलूओं का अनुसरण करना कितनी प्रमुख बात थीः ईश्वरीय प्रगटीकरण। हम चाहते हैं कि जो कुछ भी हम आराधना में करते हैं, परमेश्वर का वचन उसे भर दे, उसमें व्याप्त हो जाए और उसे प्रेरित करे। अपने वचन के द्वारा आत्मा हमार मार्गदर्शन करता है। हम चाहते हैं कि वचन हमें स्तुति के लिए प्रेरित करे। हम चाहते हैं कि वचन ही हमें अंगिकार की ओर ले कर जाए। हम चाहते हैं कि वचन हमारे प्रति परमेश्वर के अनुग्रह की याद दिलाए। हम चाहते हैं कि शिक्षण और उपदेश परमेश्वर के वचन से परिपूर्ण हो; हम प्रार्थना करते हैं कि यह परमेश्वर के वचन से भरा हो। आराधना प्रगटीकरण और प्रत्युत्तर की लय है। परमेश्वर स्वयं को प्रगट करता है, और हम अपने जीवनों के द्वारा उसका उत्तर देते हैं। तो, यही है ईश्वरीय प्रगटीकरण।

इसके बाद, समुदाय की सहभागिता। इसमें हमारा मिलजुल कर प्रार्थना करना और गीत गाना शामिल होता है। सच्चाई यह है कि मसीह में वि वास रखनेवाला कोई भी व्यक्ति आराधना के समय द ाक नहीं बना रहता; आराधना में प्रत्येक वि वासी को भाामिल होना होता है। हम एकत्रित होनेवाला समुदाय हैं, इसमें किसी व्यक्ति वि ोश या समूह ध्यान का केंद्र नहीं होता, वरन् इसमें बहुत से लोगों की सहभागिता होती है। यही कारण है कि समुदाय की सहभागिता की इन विभिन्न रीतियों में आरधना की अगुवाई के लिए हम अलग–अलग पास्टरों, अगुवों या सेवकों को भाामिल करते हैं।

अगला है श्रद्धापूर्ण स्नेह। हर सप्ताह हम प्रार्थना करते हैं कि यह लोगों की एक ऐसी सभा हो जहाँ उस परमे वर के प्रति, जिसकी आराधना के लिए हम एकत्रित हुए हैं, श्रद्धा और भय का भाव बिल्कुल स्पश्ट रुप से दिखाई देता हो। हम प्रार्थना करते हैं कि हमारी आराधना सभाएँ एक ढर्रे पर चलनेवाली या रटी रटाई न हो, क्योंकि परमे वर के समक्ष हम सभी श्रद्धापूर्ण भय से भर उठेंगे। हम परमे वर के प्रति अपने स्नेह को प्रगट करने के लिए उत्सुक जन होंगे। हम अपने चेहरों से, और हाथों से, और हावभाव से, और गीतों के गाने से, ऊँचे भाब्दों के बोलने से, और अपनी प्रार्थना से, और परमे वर की ओर से सुनने से इसके साक्ष्य बनना चाहते हैं। हम एक ऐसा श्रद्धापूर्ण स्नेह चाहते हैं जो उन सब बातों को भेद दे जिन्हें हम करते हैं।

वे सारी बातें परमे वर की स्तुति, उसके प्रति एकाग्रचित्त ध्यान की ओर ले जाती हैं। मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम जल्दी आएँ, आ ाान्वित हो कर उत्सुकता, और अधिक उत्सुकता के साथ आएँ, और उदाहरण के लिए, किसी खेल प्रतियोगिता में जाने की उत्सुकता से भी अधिक उत्सुक होकर। हम जिसके लिए एकत्रित होते हैं वह अधिक महान है, हर रविवार हम किसी भाा वत के लिए एकत्रित होते हैं और सप्ताह भर हम जो भी करते हैं यह उससे बहुत वि ाश्ट और अलग है। परमे वर के

जन के रुप में, उस परमे वर को, जो भस्म करनेवाली आग और दयालु उद्धारकर्ता है, महिमा देने... और आदर व स्तुति देने, और उसके वचन को सुनने के लिए हमारा स्वर्गीक सभा और संतो के साथ जुड़ना, एक विस्मयकारी बात है जिसे हम सप्ताह दर सप्ताह करते चले जाते हैं।

पिछले संदे ा में हमने जिन बातों पर चर्चा की थी, यह उसका एक सारां ा मात्र है। इसलिए, मैं आपको प्रोत्साहित करना चाहूँगा कि यदि आप गहराई में उतरना चाहते हैं, और मैं जो कुछ भी कह रहा हूँ उन बातों के पीछे की कहानी जानना चाहते हैं, तो आप मेरा पिछला संदे ा, जिसका भीर्शक ''परमे वर का घराना'' है, सुन सकते हैं।

हम चाहते हैं कि हमारा समुदाय सुसमाचार निर्मित हो

हम पिछले संदे ा में इस पर चर्चा कर चुके हैं, पहले, कि हम अपनी आराधना को कैसे परमे वर केंद्रित चाहते हैं। फिर दूसरा, कि हम चाहते हैं कि सुसमाचार हमारे समुदाय को बनाए, और यही बात हमें 1 तीमुथियुस की ओर ले जाती है। यह मि ानरी पौलुस की, एक संघर्श ील कलीसिया के युवा पास्टर तीमुथियुस को लिखी पत्री है। पत्र लिखने का उद्दे य तीमुथियुस और इफिसुस की कलीसिया को यह बताना था कि कैसे सुसमाचार कलीसिया बनाता है। वास्तव में, ज़रा 1 तीमुथियुस 3:15 में जाएँ। यदि आपने इसे रेखांकित नहीं किया है तो मैं आपको प्रोत्साहित करुँगा कि आप अब ये कर लें। 1 तीमु. 3:15 कहता है, ''कि यदि मेरे आने देर हो तो तू जान ले, कि परमे वर का घर, जो जीवते परमे वर की कलीसिया है, और जो सत्य का खंभा, और नेव है; उस में कैसा बर्ताव करना चाहिए।''

इस पुस्तक का सारा उद्दे य ही यह दिखाना है कि कलीसिया को कैसा बर्ताव करना चाहिए, और किस प्रकार सुसमाचार कलीसिया के बर्ताव का रुपांतरण करता है। यदि आपसे यह पूछा जाता, ''कलीसिया आखिर कैसी दिखनी चाहिए?,'' तो पूरी बाइबल में इस प्र न का सबसे स्पश्ट उत्तर आपको 1 तीमुथियुस की पुस्तक में मिलता। इसलिए, मैं चाहता हूँ कि हम सब पहले अध्याय को पढ़ें। पिछले संदे ा में हम पहले दो पद देख चुके हैं, इसलिए अब हम उन्हें दोबारा से पढ़ेंगे, और फिर उसके बाद भोश अध्याय को आगे तक पढ़ते चले जाएँगे। मैं चाहता हूँ कि आप देखें कि पौलुस ने अपनी बात किससे भारु की है। एक संघर्श ील कलीसिया में तरह–तरह की चुनौतियों का सामना कर रहे युवा पास्टर, तीमुथियुस को लिखे इस पत्र की भारुआत पौलुस किसी भी मुद्दे से कर सकता था, लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप यह देखें कि उसकी सूची में वह कौन सी बात थी जो सबसे चोटी पर थी। संघर्श ील कलीसिया के युवा पास्टर को पत्र लिखते समय उसके दिमाग और मन में कौन सी बात सबसे पहले और महत्वपूर्ण थी। वह लिखता है, पहला पदः

पौलुस की ओर से जो हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर, और हमारी आशा–स्थान मसीह यीशु की आज्ञा से मसीह यीशु का प्रेरित है, तिमुथियुस के नाम जो विश्वास में मेरा सच्चा पुत्र है। पिता परमेश्वर, और हमारे प्रभु मसीह यीशु से, तुझे अनुग्रह और दया, और शान्ति मिलती रहे।

जैसे मैं ने मकिदुनिया को जाते समय तुझे समझाया था, कि इफिसुस में रहकर कितनों को आज्ञा दे कि और प्रकार की शिक्षा न दें। और उन ऐसी कहानियों और अनन्त वंशावलियों पर मन न लगाएं, जिन से विवाद होते हैं, और परमेश्वर के उस प्रबन्ध के अनुसार नहीं, जो विश्वास से सम्बन्ध रखता है, वैसे ही फिर भी कहता हूँ। आज्ञा का सारांश यह है, कि शुद्ध मन और अच्छे विवेक, और कपट रहित विश्वास से प्रेम उत्पन्न हो। इन को छोड़ कर कितने लोग फिर कर बकवाद की ओर भटक गए हैं। और व्यवस्थापक तो होना चाहते हैं, पर जो बातें कहते और जिन को दृढ़ता से बोलते हैं, उन को समझते भी नहीं।

पर हम जानते हैं, कि यदि कोई व्यवस्था को व्यवस्था की रीति पर काम में लाए, तो वह भली है। यह जानकर कि व्यवस्था धर्मी जन के लिये नहीं, पर अधर्मियों, निरंकुशों, भक्तिहीनों, पापियों, अपवित्रों और अशुद्धों, माँ–बाप के घात करने वालों, हत्यारों, व्याभिचारियों, पुरूषगामियों, मनुष्य के बेचने वालों, झूठों, और झूठी शपथ खाने वालों, और इन को छोड़ खरे उपदेश के सब विरोधियों के लिये ठहराई गई है। यही परमधन्य परमेश्वर की महिमा के उस सुसमाचार के अनुसार है, जो मुझे सौंपा गया है।

और मैं, अपने प्रभु मसीह यीशु का, जिस ने मुझे सामर्थ दी है, धन्यवाद करता हूँ कि उस ने मुझे विश्वास योग्य समझकर अपनी सेवा के लिये ठहराया। मैं तो पहिले निन्दा करने वाला, और सताने वाला, और अन्धेर करने वाला था, तौभी मुझ पर दया हुई, क्योंकि मैं ने अविश्वास की दशा में बिन समझे बूझे, ये काम किए थे। और हमारे प्रभु का अनुग्रह उस विश्वास और प्रेम के साथ जो मसीह यीशु में है, बहुतायत से हुआ। यह बात सच और हर प्रकार से मानने के योग्य है, कि मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिये जगत में आया, जिन में सब से बड़ा मैं हूँ। पर मुझ पर इसलिये दया हुई, कि मुझ सब से बड़े पापी में यीशु मसीह अपनी पूरी सहनशीलता दिखाए, कि जो लोग उस पर अनन्त जीवन के लिये विश्वास करेंगे, उन के लिये मैं एक आदर्श बनूं। अब सनातन राजा अर्थात अविनाशी अनदेखे अद्वैत परमेश्वर का आदर और महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

हे पुत्र तीमुथियुस, उन भविष्यद्वाणियों के अनुसार जो पहिले तेरे विषय में की गई थीं, मैं यह आज्ञा सौंपता हूँ, कि तू उन के अनुसार अच्छी लड़ाई को लड़ता रहे। और विश्वास और उस अच्छे विवेक को

थामें रहे जिसे दूर करने के कारण कितनों का विश्वास रूपी जहाज डूब गया। उन्हीं में से हुमिनयुस और सिकन्दर हैं जिन्हें मैं ने शैतान को सौंप दिया, कि वे निन्दा करना न सीखें।

इस सप्ताह की दो सच्चाइयाँ.....

पौलुस ने पत्र का आरंभ करते हुए जो बात कही है, वह बहुत महत्व की है, किंतु केवल 2,000 साल पहले की इफिसुस की कलीसिया के लिए नहीं, उसकी कही यह बात तो संसार भर की कलीसियाओं के लिए भी बहुत महत्व की है। मैं आपको दो सत्य के द ान कराना चाहता हूँ, वि ोश रुप से उन बातों के प्रका ा में जो हमारे वि वास के समुदाय में चल रही हैं, और जिसको यह अध्याय सम्बोधित करता है।

पहला सत्य हमारी आराधना सभाओं के समंजनों से संबंधित है। इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप भी मेरे साथ कुछ सोचें। पिछले सप्ताह में मैने तरह–तरह के बहुत से सकारात्मक बातें सुनी, प्रोत्साहन देनेवाली बातें, जो आराधना सभाओं में हमारे द्वारा किए जा रहे समंजनों से जुड़ी हैं। हमारी आराधना सभाओं में लोगों का पहले से अधिक प्रतिक्रिया करना बहुत प्रोत्साहित करता है। इसलिए, मैं बहुत प्रोत्साहित हुआ हूँ।

लेकिन साथ ही, मैं जानता हूँ, क्योंकि मैं इस पर विचार करता रहा हूँ, कि पिछले 20 से 30 सालों के दौरान हमारी कलीसिया संस्कृति में, जैसा कि हम अपनी आराधना सभाओं में बदलाव लाते रहे हैं, मुझे यह याद दिलाया गया है कि बड़ी–बड़ी कलीसियाओं में आराधना की भौली, और गीतों व आराधना को लेकर बड़ी–बड़ी लड़ाइयाँ और युद्ध हो चुके हैं। मेरा अनुमान है कि आपमें से भी कुछेक ने ऐसा देखा होगा। इसलिए, यदि आप कलीसिया के लिए नए हैं अथवा नए वि वासी हैं, तो कलीसिया में पिछले 20 – 30 सालों के दौरान होनेवाली असुखद बातों को याद करने के लिए हमें क्षमा करें।
ऐसी कलीसियाएँ भी हैं जो आराधना करने की भौली को लेकर विभाजित हो गई हैं। ऐसी कलीसिया भी हैं जहाँ आराधना की भौली को लेकर फूट पड़ी है। यह सभा इस आराधना भौली के साथ होती है, वह सभा उस आराधना भौली के साथ होती है, यह सभा इस आराधना भौली के साथ होती है। कलीसिया में लोगों के अलग–अलग समूह आराधना की अलग–अलग भौलियाँ पसंद करते हैं, और यह देखना बहुत रोचक और दुखद होता है कि किस प्रकार आराधना की भौली और गीतों को लेकर छिड़ी बहस कलीसिया की एकता पर विना ाकारी प्रभाव डालती है। मेरे विचार से यह इतना विना ाकारी इसलिए है क्योंकि कलीसिया में पिछले 20–30 साल की समयावधि के दौरान हम आराधना की भौली और गीतों से वह करने की आ ाा रखने लगे हैं जो कार्य केवल सुसमाचार को करना है।

जो बात हमें कलीसिया में एक करती है वह आराधना की भौली या आराधना के गीत नहीं है;जो बात हमे कलीसिया में एक करती है वह है सुमसाचार के द्वारा उद्धार।

यह पहले नंबर की सबसे प्रमुख सच्चाई है। हमें जो बात कलीसिया में एक करती है वह आराधना की भौली या आराधना के गीत नहीं है; हमे जो बात कलीसिया में एक करती है वह है सुमसाचार के द्वारा उद्धार। मसीह ही अपने लोगों को एक करता है, गीत या भौलियाँ नहीं। इसको लेकर सबकी अपनी–अपनी पसंद होती है। ऐसी बातें फूट डाल सकती हैं, लेकिन यह सुसमाचार के द्वारा मसीह में मिला उद्धार है जो कलीसिया को एक करता है। यही बात पौलुस 1 तीमुथियुस में कह रहा है। इसलिए वह यहाँ आराधना की भौली या आराधना के गीतों को संबोधित नहीं कह रहा है, वरन् वह कलीसिया को संबोधित कर रहा है जो भयंकर भ्रम और फूट का सामना कर रही है, और इसलिए वह कहता है कि हमें उन बातों से भ्रुरुआत करने की ज़रुरत है जो सबसे अधिक महत्व की हैं, और केवल सुसमाचार ही सबसे अधिक महत्व रखता है।

साथ ले जानेवाली बात यह है, और इस पर मैं पिछले सप्ताह सोंचता भी रहा हूँ, और मुझे यह भी याद आतो है कि 2000 सालों से, मतलब की पहली ही सदी से, महत्वहीन बातों को लेकर, विरोधी हमारी कलीसियाओं को भटकाने और तोड़ने के लगातार प्रयास करता रहा है और महत्वपूर्ण बातों से हमारा ध्यान हटाता रहा है।

इस तरह, मैं बस हम सबको प्रोत्साहित करना चाहता हूँ, कि अगले पाँच साल बाद, 10 साल बाद, यदि प्रभु की वापसी न हुई हो, और हम में से कोई अब से 100 साल तक जीवित बचा रहे, तो मैं प्रार्थना करता हूँ कि हमारी एकता का आधार भौलियाँ, गीत, पसंद–नापसंद, व्यक्तिगत रुचि न हो, वरन् वह सुसमाचार हो जिसमें हस बस एक होते हैं। क्योंकि कलीसिया के हम लोग जब भौलियों, गीतों और पसंद–नापसंद और रुचियों पर केंद्रित हो जाते हैं, कि ''मुझे यह पसंद हैं, मुझे वह पसंद नहीं है,'' तो इस बात का खतरा होता है कि हम उस सुसमाचार को कम महत्व देने लगे, जो हमें आराधना में एक करता है। तो यही है वह पहली सच्चाई और मैं आ ाा करता हूँ कि यह हम सबके लिए आनेवाले बहुत समय तक बनी रहेगी। सबसे अधिक महत्वपूर्ण, सबसे अधिक महत्व रखता है सुसमाचार। वह हमें दूसरी सच्चाई की ओर ले जाता है जो उसी के समान है।

कोई पास्टरया कार्यक्रम वि ोश हमें कलीसिया में नहीं बनाए रखता; जो बात हमें कलीसिया में बनाए रखती है, वह है सुसमाचार में दृढ़ बने रहना।

याद रहे कि यही सबसे महत्व की बात है। सुसमाचार हमें एक करता है, लेकिन इससे भी अधिक यह हमें दूसरी सच्चाई की याद दिलाता है कि हमें कलीसिया में कोई पास्टर वि ोश या कार्यक्रम नहीं बनाए रखता; जो बात हमें कलीसिया में बनाए रखती है, वह है सुसमाचार में दृढ़ बने रहना। जान लें कि संसार भर की कलीसियाओं में पास्टर आएँगे और जाएँगें, कार्यक्रम सफल होंगे और कार्यक्रम असफल होंगे, और इन सबके साथ ठेस भी लगेगी और संघर्श भी आएँगे, लेकिन इन सब बातों से कहीं ऊपर, केवल एक सुसमाचार में हमारी दृढ़ता ही हमें कलीसिया में बनाए रखती है, और पहले अध्याय में पौलुस यही बात कह रहा है।

वह कह रहा है, ''देखो तीमथियुस, तुम एक युवा पास्टर हो। इफिसुस की कलीसिया, तुम्हारे समक्ष बहुत सी चुनौतियाँ हैं। वह बात जो तुम्हें सबसे अधिक सुनने की ज़रुरत है, वह है : सुसमाचार में बने रहो।'' वह यह बात कुछ अलग अंदाज़ में कहता है। चलिए मैं आपको दिखाता हूँ।

हम सुसमाचार का बचाव करते हैं।

पहले, वह कहता है सुसमाचार का बचाव कर। पौलुस कहता है कि हमें सुसमाचार का बचाव करना चाहिए। यह बहुत कमाल की बात है! पौलुस अपनी बात की भाुरुआत किसी भी विशय से कर सकता था, लेकिन वह आरंभ करता है सुसमाचार के बचाव की बात से। मेरा मतलब, इफिसुस नगर मूर्तिपूजकों के अनैतिकताओं और मूर्तिपूजन से भरा हुआ था। कलीसिया के बाहर सब जगह बहुत दबाव है। फिर कलीसिया के भीतर भी बहुत सी बाते हैं। कलीसिया में अधिकाधिक प्रार्थना की ज़रुरत है। आगे अपने पत्र में, पौलुस कलीसिया के अगुवों से जुड़ी कुछ समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करता है, और तब, वह कलीसिया में एक दूसरे की बेहतर रीति से देखरेख पर चर्चा करता है। पौलुस इस पर भी लिखता है कि कलीसिया में अपने जीवनों में हमें भौतिकवाद को कैसे संबोधित करना है।

हम पौलुस को अपनी पत्री में अन्य विशयों को भी संबोधित करते देखेंगे, लेकिन वे सभी विशय जिन पर वह चर्चा कर सकता था, वह सबसे पहले कहता है : ध्यान रहे कि लोग और प्रकार की ि ाक्षा न दें। वह कहता है ''इफिसुस में रहकर कितनों को आज्ञा दे कि और प्रकार की शिक्षा न दें।'' पौलुस कहता है कि सबसे पहली और महत्वपूर्ण बात यही है। सुनि ि चत करें कि कलीसिया में सही सुसमाचार का प्रचार हो रहा हो, क्योंकि यदि आप इस मोर्चे पर चूक गए, तो आप सब कुछ हार जाएँगे। यदि तुम इस मोर्चे पर जीत गए, तो यह हर बात को प्रभावित करेगा। इसलिए इस बात को पक्का करो आपका सुसमाचार बिल्कुल सही हो।

समस्या यह थी कि वहाँ कलीसिया में ऐसे लोग थे, यहाँ तक कि पुरनिये भी, जो उसे सुसमाचार से दूर ले जा रहे थे। इसलिए, पौलुस अपनी बात की भ्ाुरुआत इससे करता है कि परमे वर की व्यवस्था का कैसे प्रयोग नहीं करना चाहिए। पौलुस यहाँ जिसकी ओर संकेत करता है, मैं आपका ध्यान उसी की ओर ले जाना चाहता हूँ, और यह भी कैसे वह बात आज भी हम पर लागू होती है। हमें देखना चाहिए कि परमे वर के वचन का प्रयोग हमें कैसे नहीं करना चाहिए। पहले, पौलुस कहता है कि हमें व्यवस्था में कुछ जोड़ना नहीं चाहिए। चौथे पद में जब पौलुस कहानियों और अनन्त वं ाावलियों पर मन लगानेवाले ि ाक्षकों की बात कहता है, उस समय वह उन लोगों के विशय में कह रहा था जो बाइबल से बाहर के अतिरिक्त लेखों, जैसे कि पुराने नियम के साथ–साथ वं ाावलियों का अध्ययन कर रहे थे, और वचन में जिन लोगों का उल्लेख है उसके अतिरिक्त नए–नए लोगों के उन वं ाावलियों में होने की कहानियाँ गढ़ रहे थे जिनका वचन में कहीं उल्लेख ही नहीं है, और ऐसा करते हुए वे कलीसिया के लिए व्यवस्था में नई–नई बातें जोड़ रहे थे जो बाइबल से बाहर के लेखों पर आधारित थे। वे व्यवस्था के नियमों को बढ़ा रहे थे।

हम 1 तीमुथियुस 4 में देखेंग कि इनमें से कुछ ि ाक्षक लोगों को विवाह करने से रोक रहे थे, और कहते थे कि उन्हें विवाह नहीं करना चाहिए। फिर ऐसे भी थे जो कहते थे कि तुम्हें उन वि ोश प्रकार के भोजन का सेवन नहीं करना चाहिए जिसे परमे वर ने खाने से मना किया था। इस तरह वे व्यवस्था के नियमों में वृद्धि कर रहे थे, और वहीं दूसरी ओर, पौलुस एक अधिक गंभीर बात कहता है कि हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि व्यवस्था हमें बचाती है, क्योंकि ये और पहली सदी में इनके जैसे अन्य ि ाक्षक यह सिखा रहे थे कि व्यवस्था का पालन करने के द्वारा, चाहे वह पुरानी व्यवस्था हो या अतिरिक्त नियम, आप परमे वर का अनुग्रह कमा सकते हो। भाइयों और बहनो, इस बात पर ध्यान देने से चूके नहीं। मनुश्य का अपने कर्मों के द्वारा परमे वर का अनुग्रह कमाने का विचार पहली सदी से चलता चला आ रहा है, जो आज 21वीं सदी तक भी कायम है।

यह विचार कि कुछ बातों को करने और कुछ वि ि ाश्ट नियमों का पालन करने से आप परमे वर के समक्ष धर्मी ठहराए जाते हैं, कलीसिया के लिए खतरा बन गया था। इन सबका परिणाम क्या निकला? ये सिखानेवालों को घमंडी, और अज्ञानी बना रहा था। यही बात 7वाँ पर कहता है। वे ''व्यवस्थापक तो होना चाहते हैं, पर जो बातें कहते और जिन को दृढ़ता से बोलते हैं, उन को समझते भी नहीं।''
जो बातें वे दृढ़ता से बोलते हैं, उन्हें वे समझते तक नहीं। घमंड और अज्ञान एक खतरनाक मिश्रण है। यही बातें सुननेवालों को भ्रम और धोखे में डाल रही थीं। पौलुस अनुमान लगाने और बेकार की चर्चा, अर्थहीन संवादो और अंत में भ्रम के बारे में कहता है। थोड़ से लोगों का एक समूह सोचता था कि

पुराने नियमों या इन अतिरिक्त नियमों का पालन करने के द्वारा लोग परमे वर का अनुग्रह कमा सकते हैं। ऐसी चीज़ें करने के द्वारा वे सोचते थे कि बचा लिए जाएँगे। वह भ्रम और छल था।

जब भी पुरनिये होने के नाते हम, अपने वि वास के परिवार में किसी को ऐसी बातें सिखाते हुए पाते हैं जो वचन के अनुसार नहीं है, तो हम उन्हें आव यक गंभीरता से लेते हैं, लेकिन हो भी सकता है कि मामले ठीक ऐसे न दिखें। हो सकता है यह इस तरह का खुला मामला न हो, तो भी मैं चाहता हूँ कि हम लोग सावधान रहें, जी हाँ, इस कलीसिया का सदस्य होने के नाते हम सावधान रहें लेकिन इससे भी ज़रुरी है उन लोगों का सावधान रहना जो इस कलीसिया में सिखाने के कार्य में लगे हैं। कलीसिया के ि ाक्षकों को लगातार इस बात के प्रति सतर्क रहना चाहिए कि ''आपको यह करना चाहिए, वो करना चाहिए'' जैसी बातें कहते हुए वे व्यवस्था की बातों में अपनी बातें न जोड़ें, या यह तात्पर्य न निकालने लगें कि कुछ वि ि ाश्ट बातों को करने से आप परमे वर का अनुग्रह कमा सकते हैं। हमें स्वयं को उससे बचाना होगा और हर हाल में उससे दूर रहना है।

आप ज़रा गति सीमा के बारे में सोचें। गति सीमा के संकेत क्यों लगे होते हैं? क्योंकि सड़क पर बहुत से लापरवाह चालक होते हैं, और उन पर अंकु ा लगाना आव यक होता है। गति सीमा का नियम इसीलिए होता है...कि पाप पर रोक लग सके....यह ऐसा कहना है कि ''ठीक है, तुम्हारा इस तय गति सीमा से आगे जाना, मतलब आप खतरनाक रीति से गाड़ी चला रहे हैं।'' इस तरह, वास्तव में, नियम वास्तव में उन्हें तोड़नेवालों के लिए होते हैं। ठीक यही बात पौलुस ने 8वें और 9वें पद में कही। वह कहता है कि *''व्यवस्था धर्मी जन के लिये नहीं, पर अधमिर्यों, निरंकुशों, भक्तिहीनों, पापियों, अपवित्रों और अशुद्धों, ... के लिये ठहराई गई है।''* वह इस सूची में कई तरह के पापों का उल्लेख करता है, जो कि बहुत रोचक बात है। गहराई से देखने पर हमें पता चल जाता है कि वह वास्तव में दस आज्ञाओं के उल्लंघन की बात कर रहा था। वह अपने माता–पिता को चोट पहुँचानेवाले, हत्या करनेवाले, व्यभिचारियों, और झूठ बोलने के विशय में ही कह रहा था। इस तरह देखें तो व्यवस्था पाप को पहचानने का कार्य करती है। यह हमें पाप को समझने में सहायता करती है।

रोमियों 7 में पौलुस कहता है, ''यदि व्यवस्था न कहती कि लालच मत कर, तो मैं लालच को न जानता।'' लेकिन जब व्यवस्था ने कहा कि लालच इसे कहते हैं, तो मुझे समझ में आया कि लालच करना क्या होता है। इस तरह, व्यवस्था उस रीति से भली है कि परमे वर इसके द्वारा हमें पाप करने से रोकता है। लेकिन समस्या यह है कि हम लगातार व्यवस्था का उल्लंघन करते हैं। व्यवस्था हमारे आगे एक सीमा–रेखा खींचती है, और हम हर बार उसे लाँघ जाते हैं। क्या ऐसा नहीं है?

हम मेरे बच्चों की तरह हैं। एक दिन, उनमें से एक को ज़मीन पर एक सिक्का पड़ा मिला, और उसने वह उठा लिया। वह सिक्के के मिलने से बहुत उत्साहित था, और उससे खेल जैसा खेल रहा था। अचानक मैंने वह सिक्का उसकी मुँह की ओर जाते देखा, और इसलिए मैंने उससे कहा, ''बेटा, नहीं। बहुत से कारण हम सिक्के का मुँह में नहीं डालते। हम कभी सिक्का अपने मुँह में नहीं डालते।'' तो इस तरह मैंने उसके लिए एक नियम बना दिया, और गलत काम होने से बच गया, कम से कम थोड़े समय के लिए तो। तो, कुछ मिनटों के बाद, मैंने उससे पूछा ''सिक्का कहाँ हैं?'' वह उसे अपने मुँह में लिए चूस रहा था। नियम बना, और टूट भी गया। ऐसे ही हैं हम। व्यवस्था करती यह है, कि वह कहती है, ''यह रही रेखा।'' हम कहते हैं ''हाँ, बिल्कुल यह रेखा है।'' इस तरह, एक तरफ उसने हमें गलत करने से रोका, लेकिन समस्या तो यही है। यह समस्या हमारे मन की गहराई में है। हम व्यवस्था का उल्लंघन करते हैं। हम सभी व्यवस्था का उल्लंघन करते हैं। हम पाप करते हैं, जो हमें परमे वर की व्यवस्था के दूसरे उद्दे य की ओर ले जाता है, वह है पापी पर परमे वर की दंडाज्ञा को द र्ाना।

यह रहा सौदा। पाप करने पर व्यवस्था हमारे विरुद्ध गवाही देती है। व्यवस्था हमें बताती है कि हमने किसी प्रकार पाप किया है। हमने केवल अपने पिता की अवज्ञा नहीं की जो कहता है कि ''बेटे सिक्के को मुँह में मत रखना,'' वरन् हमने एक अनन्त, पवित्र, धर्मी न्यायकर्ता की अवज्ञा की है जो हमारे पापों का एकदम सिद्ध न्याय करनेवाला है। व्यवस्था यह बात बिल्कुल साफ कर देती है कि हम परमे वर के समक्ष अपराधी हैं। हमारे उद्धार के लिए यह बात बहुत ज़रुरी है। यही वह स्थान है जहाँ से व्यवस्था हमें मसीह की ओर ले जाती है, क्योंकि व्यवस्था हमें इस बात का आभास कराती है कि हम परमे वर के अपराधी हैं। हम सबने उसकी व्यवस्था को तोड़ा है। हमने उसका अनादर किया है। हमने उसके विरुद्ध द्रोह किया है। हम सबके मनों की यही द ा है। हम सभी व्यवस्था को तोड़नेवाले लोग हैं। व्यवस्था के कारण हमें इसका पता चलता है।

साथ ही, व्यवस्था हमें यह भी दिखाती है कि केवल मसीह ही ने सारी व्यवस्थाओं का पालन किया है। उसने सभी व्यवस्थाओं का पूरी सिद्ध रीति से पालन किया था। हमें अहसास होता है कि हब सब पवित्र परमे वर के आगे अपराधी हैं और अनन्तता के लिए उसकी दंडाज्ञा को भोगने के योग्य हैं। मसीह ही परमे वर के समक्ष धर्मी है और उसके द्वारा संपूर्ण रीति से सदा के लिए स्वीकृत है। इसलिए, यदि परमे वर के समक्ष धर्मी ठहरने की हम आ ा करना चाहते हैं, तो हमें कौन चाहिए? हम मसीह चाहिए। इस तरह, व्यवस्था हमें बचाती नहीं है, लेकिन व्यवस्था हम पर न्याय की आज्ञा देती है, और इसी प्रक्रिया में, यह हमें मसीह में उद्धार की ओर ले जाती है। हमें व्यवस्था नही बचाती; हमें मसीह बचाता है।

मार्टिन लूथर ने कहा था, ''व्यवस्था मनुश्य की आत्म–धर्मिता को चकनाचूर करनेवाला हथौड़ा है। यह उन्हें उनके पाप दिखाता है, ताकि पापों को पहचान कर वे स्वयं को दीन करें, डरें, टूटें और अनुग्रह की इच्छा करें, जो उन्हें मसीह में मिलता है। व्यवस्था हमारे स्कूल का ि ाक्षक है जो हमें मसीह की ओर लेकर आता है।'' बचाए जाने पर हमारे साथ यही सब होता है। यही है सुसमाचार। हम व्यवस्था को तोड़नेवाले हैं; और वह व्यवस्था का पालन करनेवाला। हमारे स्थान में खड़े होने के लिए हमे व्यवस्था का पालन करनेवाले व्यक्ति की ज़रुरत है। यही वह करता भी है, और फिर एक बार मसीह में छिप जाने के बाद, उससे जुड़ जाने के बाद, उसके अनुयायी बनने के बाद, व्यवस्था हमें वह तीसरी बात दिखाती है, बचाए हुओं के लिए परमे वर की इच्छा।

मसीह के अनुयायी बन कर हम उसे आदर देना चाहते हैं, तो इसके लिए हम क्या करें? देखिये, परमे वर का वचन हमें बताता है कि हमें क्या करना चाहिए। मसीह की धर्मिता में विश्राम करते हुए, हम मसीह के आत्मा के नियंत्रण में होते हैं; हम मसीह के अनुग्रह में चलते हैं। उसकी इच्छा में चलने के लिए वह हमारी भीतर से बाहर की ओर अगुवाई करता है, और तब जब वह हो जाता है, तब यह सिखानेवालों में दायित्व की भावना पैदा करता है। चौथे पद में पौलुस परमे वर से मिले प्रबंधन, और सुसमाचार को बचाने के दायित्व के विशय में कहता है। सुसमाचार की ओर ले जाता इस व्यवस्था की सटीक ि ाक्षा, सुननेवालों के मध्य प्रेम उपजाती है। मुझे 5वाँ पद बहुत पसंद है : ''*आज्ञा का सारांश यह है, कि शुद्ध मन और अच्छे विवेक, और कपट रहित विश्वास से प्रेम उत्पन्न हो।*'' वही तो हम चाहते हैं। हमने कभी भी उन लोगों की तरह बनने की इच्छा नहीं की जो बस नियमों की लंबी सूची का पालन केवल इसलिए करते हैं, क्योंकि यह हमारा कर्त्तव्य और दायित्व है। हम इसलिए व्यवस्था का पालन नहीं करते क्योंकि हमें ऐसा करना चाहिए, और अनन्त जीवन पाने के लिए हमें ऐसा करना ही होगा। यह मसीहत नहीं होती।

बजाय इसके, व्यवस्था के कारण हमें परमे वर के आगे अपने पापों की पहचान कर सके हैं, और व्यवस्था हमें मसीह की धर्मिता को देखने की ओर ले जाती है। उसमें छिपे हुए, उसमें विश्राम पाते हुए, हमारे लिए व्यवस्था कोई भार नहीं आनन्द का कारण बन जाती है। हम उसकी इच्छा के अनुसार इसलिए नहीं चलते कि हमें ऐसा करना पड़ता है, वरन् इसलिए कि हम ऐसा करना चाहते हैं, क्योंकि हम भीतर से पूरी तरह बदल दिए गए हैं।

तो यह रहा सौदा। इस उपदे ा को सुन रहा हर व्यक्ति, चाहे आप मुस्लिम पृश्ठभूमि से हैं या हिंदु पृश्ठभूमि से, चाहे यहूदी पृश्ठभूमि से हैं या बापटिस्ट पृश्ठभूमि से या मेथोडिस्ट पृश्ठभूमि से, एक

प्रेस्बिटेरियन पृश्ठभूमि से हैं या केथॉलिक पृश्ठभूमि से, चर्च ऑफ क्राइस्ट की पृश्ठभूमि से, या फिर किसी भी पृश्ठभूमि, या नास्तिक ही क्यों न हों, आप यह जान लें कि : परमे वर की व्यवस्था हम सभी के मनों में गहराई से समाई हुई है। चाहे आपने परमे वर का वचन कभी न पड़ा हो, तो भी उसकी व्यवस्था हमारे मन में लिखी हुई है। हम भली और बुरी बातों का अन्तर जानते हैं, क्योंकि यह बात परमे वर ही ने रखी है, और हम सभी ने बुरी बातें की हैं। हम सभी ने परमे वर के विरुद्ध पाप किया है। वि वे के बहुत से धर्म तो भी यह कहते हैं कि अच्छ काम करने के द्वारा मैं परमे वर के आगे धर्मी ठहर सकता हूँ।

मैं अपनी पुरज़ोर आवाज़ में आपसे गुहार लगाऊँगा कि आप इस पर वि वास न करें, क्योंकि उद्धार हम मनुश्यों के प्रयासों से नहीं मिल सकता। उद्धार केवल ई वरीय सिद्धी से प्राप्त हो सकता है। हम अपने कार्यों के द्वारा परमे वर का अनुग्रह नहीं कमा सकते। हमें उसकी आव यकता है कि वह हमारे लिए कार्य करे, और वह व्यवस्थापालन बनें जो हम नहीं बन सकते। यही संपूर्ण सुसमाचार का तत्व है। आपने और मैने व्यवस्था तोड़ी है; उसने इसका पालन किया है। व्यवस्था को सिद्ध रीति से पालने करनेवाले ने उस मृत्यु को हमारे लिए सहा, जो अपने पापों के कारण हमें मिलनी थी। पाप और मृत्यु पर जयवंत होते हुए वह कब्र से उठाया जा चुका है, जिसके कारण, जब हम अपने जीवनों को उसमें मिलाते हैं, हमारा परमे वर से मेलमिलाप हो जाता है, हम मसीह में उसके आगे सदा के लिए धर्मी ठहरते हैं। यही सुसमाचार है, और इसलिए यदि आपने कभी मसीह पर वि वास नहीं किया कि वह आपके स्थान पर व्यवस्थापालक बने, तो मैं आपको मसीह में वि वास करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहूँगा। तो, कलीसिया, यह जान लो कि पिछले 2000 सालों से कलीसिया के मसीहियों के मन और दिमाग में विरोधी कार्य करता रहा है कि उन्हें उस महिमा के सुसमाचार से दूर कर दे। ऐसा कतई न होने दें; इस सुसमाचार की अपने प्राणो से रक्षा करें।

हम सुसमाचार का उत्सव मनाते हैं

यह बात, तब हमें दूसरे बिंदु की ओर ले जाती है : सुसमाचार का उत्सव मनाएँ। 12वें से लेकर 17वें पद तक, पौलुस अपनी व्यक्तिगत गवाही और जयवंत स्तुति करता है। इन सबके बीच पूरे बाइबल में है, सुसमाचार की सबसे स्पश्ट, संक्षिप्त, और प्रभावी तस्वीर। 15वाँ पद, आप इसे रेखोंकित कर सकते हैं। *''यह बात सच और हर प्रकार से मानने के योग्य है, कि मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिये जगत में आया।''*

यही है सुसमाचार। *''मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिये जगत में आया,'' और पौलुस आगे कहता है कि ''जिन में सब से बड़ा मैं हूँ।''* यही है सुसमाचार। ज़रा विचार करें कि इस कथन का सार

क्या है : *मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिये जगत में आया।''* यह सुसमाचार देहधारी है, और अभी तक अविवादित है। आप कहेंगे इसका क्या मतलब है? ये बहुत बड़े–बड़े भाब्द हैं।

देहधारी और अभी तक अविवादित होने का क्या अर्थ है? यी ु मसीह इस जगत में आया। जगत में उसका आस्तित्व पहले से था। पहले से मौजूद, परमे वर का भाा वत पुत्र, त्रिएक परमे वर में दूसरा व्यक्ति संसार की नींव धरे जाने से पहले भी मौजूद था। उसने लोगों पर वह परम कृपा दिखाई, और इस जगत में आया, मनुश्य की देह को धारण किया और एक ि ा ु के रुप में बैथलेहम की एक चरनी में पैदा हुआ। यह है उसका देहधारी होना। हमारे स्थान पर व्यवस्था का पालन करने और ऐसा जीवन जीने जो हम नहीं जी सकते थे, उसने मुनश्य की देह को धारण किया, और फिर, जैसा कि हमने कहा था, वह हमारी मौत मारा गया। उसने व्यवस्था को तोड़नेवालों के दंड को अपने ऊपर ले लिया, और फिर कब्र पर जयवंत होकर मृत्यु से जिलाया गया। वे भात्रु, जिन्हें हम नहीं हरा सके, उस पाप और मृत्यु को उसने हरा दिया। इसके द्वारा उसने पापियों के उद्धार का मार्ग तैयार किया, और पूरे इतिहास में इससे महान और कोई बात कभी नहीं हुई।

पौलुस कहता है, आप इसे लिख लें। यह सत्य है, *सच और हर प्रकार से मानने के योग्य।* पिछले 2000 सालों से, वही सत्य बना रहा है और पीढ़ी दर पीढ़ी उद्घोशित हुआ है। यह कोई मिथक नहीं है; यह कोई अंतहीन वं ावली नहीं है; यह कोई अनुमान लगाना नहीं है। यह वास्तविकता है। पापियों को बचाने के लिए वह आया, मरा और फिर से जिलाया गया। देहधारी, तो भी अविवादित : सार्वभौमिक, तो भी व्यक्तिगत। वह सभी पापियों के लिए आया, लेकिन वे कौन हैं? इस सच्चाई को पूरी तरह से स्वीकारनेवाले सभी पापी। पौलुस कहता है, ''पापियों की सूची में मेरा नाम सबसे ऊपर है।''

अब आप इसके बारे में सोचें। यह बात पौलुस को परमे वर के अनुग्रह का उत्सव मनाने की ओर ले जाती है। पौलुस कहता है, ''परमे वर का अनुग्रह नि ात है।'' आप 15वें पद से ऊपर की ओर जाएँ, और 13वें पद में देखेंगे कि पौलुस कहता है कि पहले वह कैसे एक निन्दा करने वाला, और सताने वाला, और अन्धेर करने वाला और मसीह व उसकी कलीसिया का घोर विरोधी हुआ करता था। क्या आपको याद है कि इन भाब्दों को लिखनेवाला व्यक्ति वही है जो एक दिन संसार के मानचित्र से कलीसिया का नामोनि ाान तक मिटा देना चाहता था? इन भाब्दों को लिखनेवाला व्यक्ति वही है जिसने स्तीफनुस पर हुए पथराव का निरीक्षण किया था। यही वह व्यक्ति है जिसने स्तीफनुस पर पथराव करनेवाले लोगों के समूह का निरीक्षण किया था, जब तक कि उसकी जान नहीं निकल गई। इसके बाद, डर के कारण कलीसिया के तितर–बितर होने पर, यही व्यक्ति उनका पीछा भी करता है, और जितने हो सकें उतने लोगों को गिरफ्तार करके उन्हें जेल में डालता है। वह जितना हो सके, उतने लोगों की हत्या करता है। मसीहियों की हत्या करने पौलुस जब दमि क के रास्ते जा रहा था,

तब रास्ते में उसका सामना मसीह से होता है और उसका मन–परिवर्तन हो जाता है। यदि कोई था जिसे परमे वर का प्रेम और उद्धार नहीं मिलना चाहिए था, तो वह पौलुस था। हमें यह समझना चाहिए कि स्वयं पौलुस में ऐसा कुछ नहीं था जिसके कारण परमे वर उसे उद्धार देता। पौलुस का उद्धार भात–प्रति ात परमे वर में उत्पन्न हुआ था, और यही बात आपके और मेरे लिए भी सही है।

यह सोंच कर पथभ्रश्ट मसीहत के यह आत्मसम्मान को झाड़ पर चढ़ानेवाले बड़े–बड़े भाब्दों के झाँसे में न आएँ कि हमने परमे वर का अनुग्रह कमा लिया है। आपमें ऐसा कुछ नहीं है कि परमे वर आपकी ओर आए। आपने और मैंने उसकी किसी ऐसी भार्त को पूरा नहीं किया है जिससे अनुग्रह कमाया जा सकता है। यह अनुग्रह है, और यह बिना की योग्यता और भार्त के दिया गया है। आपका उद्धार केवल परमे वर के परम अनुग्रह पर टिका है। यह नि ार्त अनुग्रह है, यह उद्दे यपूर्ण अनुग्रह है।

अब, पौलुस के मामले में नि चय ही इसने उसका पूरा जीवन ही बदल दिया, लेकिन आप इससे भी गहराई में देखें। मैं चाहता हूँ कि आप 16वें पद को देखें; वह बहुत ही महान है। आप किसलिए बचाए गए हैं? पौलुस कहता है कि *''मुझ पर इसलिये दया हुई, कि मुझ सब से बड़े पापी में यीशु मसीह अपनी पूरी सहनशीलता दिखाए, कि जो लोग उस पर अनन्त जीवन के लिये विश्वास करेंगे, उन के लिये मैं एक आदर्श बनूं।''* पौलुस के लिए परमे वर के अनुग्रह का उद्दे य आपके प्रति परमे वर की पूरी सहन ीलता को दिखाना था।

क्या आप समझे यह बात? पौलुस के प्रति परमे वर के अनुग्रह का उद्दे य आपके प्रति सहन ीलता दिखाना था। यह बात सुननेवाले हर व्यक्ति के लिए सही है। इसलिए, यदि आप यहाँ हैं, और आप एक मसीही नहीं है, और आपने कभी ऐसा कुछ सोचा था, या भाायद अभी सोंच रहे हैं कि ''परमे वर मुझे नहीं बचा सकता या नहीं बचाएगा। मैं तो उससे लड़ा था, उसका विरोध किया था, और अपने जीवन के हर पक्ष में मैंने उसके विरुद्ध द्रोह किया था, और उसका आनन्द भी लिया था। मैं उससे कोई लेना–देना नहीं रखना चाहता था। परमे वर मुझे नहीं बचाएगा।'' तो जान लें : दो हज़ार साल पहले, परमे वर ने कलीसिया पर सताव भेजनेवाले सबसे प्रमुख व्यक्ति को लिया और उसे कलीसिया का सबसे प्रमुख मि ानरी बना दिया, इसलिए कि 2000 साल बाद, आप इस समाचार को सुनें। आप परमे वर की दया से बाहर नहीं हैं। उसकी दया की पहुँच आपके पापों की गहराई से कहीं अधिक है। उस पर भरोसा रखें; उसकी दया और उसके अनुग्रह को ग्रहण करें। अपने प्रति परमे वर की सहन ीलता को जानें। आप चाहे जो भी हैं या आपके जो भी काम किए हैं, ये भाब्द संपूर्ण स्वीकृति के भाब्द हैं। *''मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिये जगत में आया,''* उनके लिए भी जो स्वयं को सबसे नीच पापी समझते हैं।

इसके बाद, परमे वर का अनुग्रह हमें परमे वर की स्तुति की ओर ले जाता है। पौलुस भावविह्वल हो उठता है, और 17वें पद आप देखते हैं ''अब सनातन राजा अर्थात् अविना ी अनदेखे, अद्वैत परमे वर का आदर और महिमा युगानुयग होती रहे, आमीन।'' परमे वर की महिमा राजसी और भाा वत है। वह सनातन राजा है; वह भाा वत है। वह कभी थकता नहीं है। वह अविकारी है। विकार और मृत्यु उसे छू नहीं सकते। वह सदा के लिए विराजमान राजा है। राजसी और अनन्त, और वह अदृ य और अतुलनीय है। परमे वर हमे देखने और कल्पना करने की क्षमता से परे हैं, उसकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती। एक केवल वही परमे वर है जो सारी महिमा और आदर के योग्य है। तो ऐसा ही हो।

यही है कुंजी। हम सभी अपने जीवन में अच्छे समय से गुज़रेंगे, और हम सभी अपने जीवन में विकट समय से गुज़रेंगे, लेकिन कलीसिया का सिर, मसीह, हमारा परमे वर, हमारा उद्धारकर्ता, हमारा राजा सदा अपने सिंहासन पर विराजमान रहेगा, और वह अपनी कलीसिया को कभी हारने न देगा। हम जीवन में अच्छे–बुरे समय से गुज़र सकते हैं, लेकिन ऊँचें स्थानों में बैठा हमारा परमे वर अपनी कलीसिया का सदा मार्गद ान करने, अगुवाई करने, रक्षा करने, भाुद्ध करने, पोशण करने और अंत में उसे सदा के लिए सुरक्षित रखने के लिए प्रति प्रतिबद्ध है। यह चट्टान जैसी मज़बूत गारंटी है।

हम सुसमाचार के लिए लड़ते हैं।

उसके प्रका ा में, तीमुथियुस को पौलुस का अंतिम प्रोत्साहन होता है कि वह सुसमाचार के लिए लड़े। हम सुसमाचार को बचाते हैं, हम सुसमाचार का उत्सव मनाते हैं, और हम सुसमाचार के लिए लड़ते हैं। हमारे पास अभी अधिक समय नहीं बचा है, तो भी चलिए 18,19 और 20वाँ पद देखें, 18वें पद के अंत में पौलुस कहता है, ''अच्छी लड़ाई को लड़ते रह.....।'' वह हुमिनयुस और सिकंदर नाम के दो व्यक्तियों के बारे में कहता है, जिन्हें हम जानते हैं। अधिकां ा लोगों का मानना है कि वे इफिसुस की कलीसिया में पुरनिये थे, जो बाद में सुसमाचार से भटक गए थे। वे झूठे सिद्धांतों को सिखाने लगते हैं। इसी कारण पौलुस तीमुथियुस को, जो कि कलीसिया में पास्टर/पुरनिये में से है, सो, वह कहता है ''देखों वे सुसमाचार से भटक गए हैं। तुम्हें सुसमाचार के लिए लड़ना होगा। अपने मन में एक लड़ाई छेड़ दो, ताकि तुम स्वयं ऐसा न करो।''

यह हमारे लिए बहुत बड़ी बात है। यह कलीसिया के हर सदस्य, ि ाक्षक, पास्टर और पुरनिये के लिए बहुत महत्व की बात है। इसे चिन्हित कर लें: कोई भी, मैं भी, सुसमाचार से भटक सकता हूँ। कोई भी

सदस्य, पास्टर, सेवक, ि ाक्षक, छोटे समूहों का अगुवा या कि कोई भी सदस्य इस प्रलोभन से मुक्त नहीं है। इसलिए हम सभी को अपने जीवन में सुसमाचार के लिए लड़ना चाहिए।

एक बार जब आप, मेरे भाइयों और बहनो यह देखेंगे कि हम में से हरेक व्यक्ति अपने जीवनों में, अपने भाादी ाुदा जीवन में, अपने परिवारों में, कामकाज की जगहों में, स्कूल में, प्रांगणों में, और अपने घरों में लड़ाई लड़ रहा है, तो हम नहीं चाहेंगे कि सुसमाचार के लिए लड़ते समय हम कभी नि ास्त्र न हों। हम एक युद्ध में हैं, और हमारे आपसपास लड़ाई पूरे ज़ोर पर है। ऊँचे आका ा के स्थानों में दुश्ट की आत्मिक ताकते हैं, जो आपकी आत्मा के विरुद्ध लड़ रही हैं, मोहक छलावा कर रही हैं, फूट को उकसा रही हैं, और भौतान और उसकी सेना नहीं चाहती कि सुसमाचार आपके जीवन, आपके विवाहित जीवन और आपके परिवार और आपके स्कूल या कामकाज की जगह में और उसके द्वारा गूँजें। हम सबके जीवनों में इस युद्ध का रुप अलग होता है, लेकिन लापरवाही न बरतें। आप युद्ध में हैं, इसलिए एक अच्छी लड़ाई लड़ें। ''...वि वास और उस अच्छे विवेक को थामे'' रहें.....19वाँ पद। सुसमाचार को थामे रहें।

एक बार, मेरे एक मित्र ने कहा था कि हम सभी के भीतर एक छोटा सा व्यक्ति छिपा है जिसके लिए व्यवस्था ही सब कुछ है, इसलिए लड़ें! हर दिन इस विचार से लड़ते रहें कि अपने अच्छे कामों के द्वारा आप परमे वर का अनुग्रह पा सकते हैं। मसीह की धर्मिता में विश्राम करें। उसकी धर्मिता में आनन्द करें और प्रसन्न होवें और उसकी इच्छा में चलें, लेकिन इसलिए नहीं कि यह आपका कर्त्तव्य है वरन् इसलिए क्योंकि वह आपकी इच्छा और प्रसन्नता है। ऐसा करने के लिए, लड़ना होगा। कुछ लोग सोचते हैं, ''देखो, मैं एक मसीही बन गया हूँ; और मैं इसे तब तक करता रहूँगा जब तक कि बातें सुगम न हो जाएँ। यह एक लड़ाई होगी। यह पुस्तक में कई बार आए उल्लेख में से पहला उल्लेख है जहाँ हम पौलुस को यह कहते हुए सुनते है कि तुम युद्ध मैं हो, आप लड़ाई में हैं।

इसलिए अपने जीवनों में सुसमाचार के लिए लड़ो, और तब वह हुमिनयुस और सिकंदर के बारे में बातें करता है जिन्हें उसने '' ौतान को सौंप'' दिया है। 1 कुरिन्थियों 5 में पौलुस की कही बातों, और मत्ती 18 में यी ाु की ि ाक्षा के आधार पर, वह लगभग उस तथ्य का संदर्भ है कि ये दोनो आदमी कलीसिया से निश्कासित किए गए थे। उन्हें कलीसिया से निकाल दिया गया था। यही है सच्चाई की तस्वीर कि ये आदमी उसी कारण मसीह से अलग हो गए जिस कारण वे उसके पास जाते।

इसलिए पौलुस कहता है, ''तीमुथियुस, उनके विरुद्ध यह अंतिम कदम उठाना पड़ा था क्योंकि वे दोनो आदमी झूठे सिद्धांत सिखा रहे थे, लेकिन सुसमाचार तो कलीसिया में सबसे अधिक महत्व रखता है,

और कई बार बहुत गंभीर कदम भी उठाने पड़ते हैं ताकि यह सुनि ित हो सके कि आप इस सुसमाचार के लिए लड़ रहे हैं, लेकिन केवल अपने जीवनों में ही नहीं, वरन् कलीसिया में भी। हम चाहे जो भी करें, लेकिन हम सुसमाचार को पकड़े रहते हैं क्योंकि यही है वह जो हमे एक करता है, और यही हमें विकट समय में थामे भी रहता है।

यह बात हमें इस मेज़ की, उस सच्चाई की ओर ले आती है जो हमें एक कलीसिया की तरह एक करती है, और जो हमें अपने जीवन में आनेवाले विकट समय, और कलीसिया में हमारे समक्ष आनेवाली समस्याओं और चुनौतियों का सामना करते समय दृढ़ बने रहने में सक्षम बनाती है। केवल एक बात हमें दृढ़ता से बने रहने में सक्षम बनाती है कि मसीह ने अपनी देह दी है और अपना लहू बहाया है। वि वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है। इसलिए कठिनाइयाँ और चुनौतियाँ के आने पर हमें डरने की कोई ज़रुरत नहीं है क्योंकि हम तो मसीह के साथ उसके जीवन, उसकी मृत्यु और उसके जिलाए जाने में छिपे हैं। यही वह बात है जो अन्य किसी भी बात से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।